बाल विज्ञान पत्रिका

अगस्त 2008 • 15 रुपए

चकमक

मेरा भाई और मैं

कितनी गर्मी थी उस दिन। कुछ ज़्यादा ही। मैं और मेरा भाई खिड़की के पास बैठे थे। हवा के इन्तज़ार में। हवा तो उस दिन जैसे किसी और ही देस चली गई थी। सब कुछ रुका था। पत्ते चुप। पेड़ चुप। सब चीज़ों पर चुप्पी लगी थी। सब कुछ इतना थमा था, दीवार पर छिपकली जितना। पेड़ बेचारे सिपाहियों की तरह तनकर खड़े थे। धूल से उनके चेहरे काले और बदन कुछ भारी हो गए थे। उनकी सूरतें देखकर लगता क्या ये फिर हरे हो पाएँगे?

आगे की कहानी पृष्ठ 20 में